ब्राक मीडिया

डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय के मीडिया छात्रों का प्रायोगिक समाचार पत्र

नई दिल्ली बुधवार 15 नवम्बर , 2023 | अंक 2 , पृष्ठ संख्या 1

कॉलेज में किया गया रक्त दान कैंप आयोजित

कैंप मे रक्त दान करता विद्यार्थी

नई दिल्ली : रेड रिबन क्लब और एन एस एस के सहयोग से 31अक्टूबर 2023 को कॉलेज में रक्त दान कैंप का आयोजित किया गया । कॉलेज के विद्यार्थियों ने सकारात्मक सहयोग करते हुए बड़ी संख्या में रक्त दान किया। इस सहयोग के लिए डॉ निशि शर्मा ने सभी विद्यार्थियों ,शिक्षकों और कर्मचारियों का धन्यवाद किया ।

बधाइयाँ

डॉ. प्रवीण गौतम कॉलेज के हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार पाठयक्रम पिछले चार साल से कार्यरत थे। अभी हाल ही में आपकी स्थाई रूप से नियुक्ति कालिंदी कॉलेज के जर्नलिज्म विभाग में हुई है। कॉलेज परिवार की ओर से आपको नए दायित्व के लिए बधाई और शुभकामनाएं।

डॉ. प्रियंका सैनी ने लंबे समय से कॉलेज के वाणिज्य विभाग में अध्यापन कार्य किया है। अब आपकी स्थाई नियुक्ति गार्गी महाविद्यालय में हुई है। कॉलेज परिवार की ओर से आपको बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

डॉ. रेखा रानी ने लंबे समय से कॉलेज के मनोविज्ञान विभाग में अध्यापन कार्य किया है। अब आपकी स्थाई नियुक्ति विवेकानंद महाविद्यालय में हुई है। कॉलेज परिवार की ओर से आपको बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

संजय एस निगोमेबस आपने पिछले एक दशक से ज्यादा समय से कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में अपनी सेवाएं प्रदान की है। अभी हाल ही में आपकी स्थाई रूप में नियुक्ति इंद्रप्रस्थ कॉलेज में हुई है। कॉलेज परिवार की ओर से आपको बधाई और शुभकामनाएं ।

अगले साल फरवरी में बड़े स्तर पर आयोजित होगा डीयू पूर्व छात्र सम्मेलन : प्रो.अनिल कुमार

नई दिल्ली : *डीयू फाऊंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रो. अनिल कुमार से विशेष चर्चा करते डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज मीडिया टीम के सदस्य मो. सैफ और सक्षम पांडे । पेश है चर्चा के मुख्य अंश*

प्रो. अनिल कुमार के साथ चर्चा करते मीडिया टीम के सदस्य मो.सैफ

Q दिल्ली यूनिवर्सिटी पूर्व छात्र क्लब पहले से अस्तित्व में हैं। साथ ही प्रत्येक कॉलेज का अपना पूर्व छात्र क्लब है। फिर किस उद्देश्य के साथ दिल्ली यूनिवर्सिटी फाऊंडेशन को स्थापित किया गया है?

प्रो. अनिल कुमार: दिल्ली यूनिवर्सिटी के सभी हितधारकों जैसे प्राध्यापक, सेवानिवृत्त प्राध्यापक और विद्यार्थी को एक मंच पर लाकर एक नेटवर्किंग तैयार करना हमारा उद्देश्य है। हम पिछले 6 महीने से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। सबसे पहले हमने दिल्ली में दिल्ली यूनिवर्सिटी का पूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग जोकि दिल्ली यूनिवर्सिटी से पढ़े हुए हैं उन्हें एक मंच पर लेकर आएं। दिल्ली के साथ-साथ पूरे भारतवर्ष में दिल्ली यूनिवर्सिटी के पूर्व छात्र हैं। भारत के साथ दुबई, सिंगापुर, अमेरिका, लंदन में भी हमारे पूर्व छात्र हैं। इसलिए हमने दिल्ली से बाहर भी कार्यक्रम आयोजित करने का सोचा है । हमारे फाऊंडेशन का मुख्य ध्येय जुड़ाव करना है। जुड़ाव के बाद अगर हमारा कोई छात्र यूनिवर्सिटी के लिए कुछ योगदान करना चाहे तो उसके लिए हमने एक एंडोमेंट फंड बनाया है। हमारे कुलपति प्रो. योगेश सिंह जी का सपना है कि आने वाले सालों में 1 हज़ार करोड़ रुपए का एंडोमेंट फंड इकट्ठा हो जाए और मुझे लगता है कि हम आने वाले सालों में इस लक्ष्य को भी जरूर प्राप्त करेंगे।

प्राथमिक उद्देश्य है कि हम अधिकांश पूर्व छात्रों को दिल्ली यूनिवर्सिटी फाऊंडेशन के मंच पर लेकर आए। इसी संदर्भ में फाऊंडेशन ने मुंबई में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। हमारे फाऊंडेशन के लिए गर्व की बात है कि दिल्ली यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. योगेश सिंह जी का सहयोग भी हमें मिल रहा है।

Q डीयू को अभी पूर्व छात्रों का उतना सहयोग नहीं मिलता दिखाई देता, जितना IIT को मिलता है। इसके पीछे क्या कारण है?

शेष पृष्ठ सं. 2 पर >

युवाओं ने NDRF से सीखी आपदा से निपटने की बारीकियां

नई दिल्ली : 31 अक्टूबर 2023 को एनडीआरएफ की 16 वीं बटालियन दिल्ली ने डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज (डीयू) में एनएसएस और एनसीसी के कार्यकर्ताओं को आपदा प्रबंधन की प्राथमिक जानकारी दी। इस दौरान एनडीआरएफ के अधिकारियों ने विद्यार्थियों को आपदा के दौरान बचाव , सुरक्षा के उपायों प्राथमिक उपचार आदि के बारे में जानकारी दी । कॉलेज के प्राचार्य प्रो. आर एन दूबे ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया । इस कार्यक्रम में एन.डी.आर.एफ के इंस्पेक्टर विक्की और सब इंस्पेक्टर पंकज वर्मा एवं अन्य कर्मी मौजूद रहे। इंस्पेक्टर विक्की ने विद्यार्थियों को आपदा की परिभाषा और बचाव के नियम बताए । एस आई पंकज वर्मा ने विद्यार्थियों को रक्त का बहाव रोकना, सी.पी.आर देना, गला चोक, सर्पदंश से बचाव और पीड़ित व्यक्ति का प्राथमिक उपचार करना, जहर और बिना जहर वाले सांपो में अंतर स्पष्ट करना भी बताया ।

इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने स्वयं बचाव की विभिन्न प्रक्रियाओं को आजमाया और सीखा। एनडीआरफ के अधिकारियों ने विद्यार्थियों के मन मे उठ रही जिज्ञासाओं का समाधान भी किया । कार्यक्रम में बीए (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के छात्र राहुल ने बताया कि इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने से उन्हें अत्यधिक लाभ हुआ है। अब वे पहले से ज्यादा आपातस्थिति से निपटने में स्वयं को सक्षम पाते हैं। मनुष्य के जीवन में कई आकस्मिक घटनाएं होती हैं जैसे आग लगना, सांप काटना और हृदय घात आदि सामान्य घटनाएं हैं।

राष्ट्रीय कैडेट कोर के प्रथम वर्ष के छात्र आलोक कुमार ने बताया कि वह एन डी आर एफ के इस कार्यक्रम से अत्यधिक प्रसन्न हैं । वे एस आई पंकज की बातों से प्रभावित हुए और उनसे बहुत कुछ सीखा। इस कार्यक्रम ने उन्हें आपदा में धैर्य रखना सिखाया। बतौर एन सी सी कैडेट उनका यह सीखना आवश्यक भी था क्योंकि किसी भी आपदा में एन सी सी को राहत बचाव में भी भेजा जाता है। अंत में एन एस एस कन्वीनर रविंद्र सिंह ने कार्यक्रम का औपचारिक समापन किया।

राहत और बचाव की बारीकियाँ देते एन. डी. आर. एफ अधिकारी

- सक्षम पांडेय और राहुल चौरसिया

नव उद्यमियों के लिए सुनहरा अवसर - ए.एस.पी

नई दिल्ली : उधमोदय फाउंडेशन द्वारा कैरियर डेवलपमेंट सेंटर और समर्थ भारत के सहयोग से दिल्ली विश्वविद्यालय के महर्षि कणाद भवन में दो दिवसीय स्टार्ट-अप एक्सेलेरेटर प्रोग्राम (एसएपी) का आयोजन किया गया। 27-28 अक्टूबर को इस आयोजन से पहले, उधमोदय फाउंडेशन को देश के सभी कोनों से नये स्टार्ट-अप योजनाओं के लिए 400 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए, जिसमें से लगभग 100 सर्वश्रेष्ठ व्यावसायिक प्रस्तावों को प्रस्तुति के लिए चुना गया। कार्यक्रम के उद्घाटन में समर्थ भारत के मेंटॉर और उधमोदय फाउंडेशन के निदेशक भारत भूषण अरोड़ा ने एक प्रेरक वक्तव्य दिया। फाउंडेशन का उद्देश्य उद्यमियों के लिए एक सहयोगी वातावरण तैयार करना,उभरते युवा उद्यमियों के लिए एक मंच प्रदान करना और उनकी उद्यमशील यात्रा के हर चरण में उनकी सहायता करना है। दो दिनों तक चलने वाले इस आयोजन के पहले दिन देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए उभरते उद्यमियों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। इन प्रस्तुतियों का मूल्यांकन उद्यम विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा किया गया, जिसमें प्रमुख उद्यम पूँजीपति,फंड निवेशक,साथ ही अनुभवी और उभरते उद्यमी शामिल थे। कार्यक्रम के दूसरे दिन, सुपर-25 स्टार्ट-अप बिजनेस प्रस्तावों की घोषणा की गयी, जिन्हें व्यापक उद्यमशीलता समर्थन प्राप्त होगा, जिसमें मेंटरशिप, सीड फंडिंग, स्केल-अप फंडिंग और इनक्यूबेशन सेंटर ऑनबोर्डिंग शामिल है।

- जयदीप दिनकर

भेदभाव से परे है लोक आस्था का महापर्व छठ

नई दिल्ली : छठ के समय मौसम अपनी करवट बदल कर खुद को सर्दी में ढलने की प्रक्रिया में होता है । इधर देश दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में रह रहे बिहारवासियों के मन में भी एक अलग उत्साह होता है । छठ मूल रूप से बिहार प्रांत के सबसे महत्वपूर्ण पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह झारखंड के कुछ हिस्से तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में भी बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। लोक आस्था का यह महापर्व आज दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में मनाया जाने लगा है। बिहार के लोग जो अमेरिका , जर्मनी ,फ्रांस, रूस, कनाडा तथा अन्य देशों में रहते हैं वे वहां इस पर्व को बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाते हैं।

हजारों वर्षों से मनाए जाने वाले लोक आस्था के महापर्व के पीछे कई लोक कथाएँ सुनने को मिलती हैं उनमें से ही जनश्रुति में चली आ रही है कहानी यह है कि जब राजा प्रियवत और महारानी मालिनी को संतान नहीं प्राप्त हो रहे थी, तब राजा प्रियवत ने महर्षि कश्यप के कहने पर पुत्रयष्टि यज्ञ करवाया । इस यज्ञ में महर्षि कश्यप ने महारानी मालिनी को खीर खाने को दिया जिसके खाने से राजा प्रियव्रत को पुत्र तो प्राप्त हुआ लेकिन उसमें प्राण नहीं थे। तब विश्व के छठे भाग की देवी माता छठी ने अपनी शक्ति से उस बालक में प्राण डाल दिए थे । तभी से यह महापर्व मनाया जाने लगा । इस त्यौहार को माता अपने संतानों की लंबी उम्र और उनके बेहतर जीवन के लिए करती हैं।

पूरे चार दिनों का यह लोकपर्व पवित्रता का परिचायक है। पहला दिन नहायखाय का होता है , इस दिन वर्तियों के द्वारा ठेकुआ बनाने के लिए गेंहू को धोया और सुखाया जाता है। वर्तियों के द्वारा घरों में चावल ,दाल और लौकी की सब्जी बनाई जाती है। दूसरा दिन खरना होता है। इस दिन

छठ घाट पर छठ मनाते लोग

महिलाएं पूरे दिन उपवास में रहती है तथा शाम को खीर - पूरी बनाई जाती है । जिसे घर के शीराघर (गृह देवता का स्थान) मे चढ़ाया जाता है इसके पश्चात वर्ती महिलाएं शीराघर का दरवाजा बंद करके प्रसाद ग्रहण करती हैं। तीसरा दिन पहला अरग (अर्घ्य) का होता है । सुबह-सुबह महिलाएं स्नान ध्यान कर ठेकुआ और लड्डू बनाने की तैयारी में लग जाती हैं। इसमें प्रयोग किए जाने वाले जलावन के रूप में मुख्य रूप से आम की लकड़ी का प्रयोग होता है।

घर के बच्चों द्वारा छठ में लगने वाले फल फूल को गाँव में मांग - मांग कर जुटाते हैं। यह प्रथा पहले से चली आ रही है कि हर कोई एक दूसरे से सहायता करके इस पर्व को सफल बनाता हैं जो भाईचारे की भावना को बढ़ावा देता है। तथा यह भी सिखाता है कि हमें जीवन में एक दूसरे के साथ तालमेल करके कैसे जीना चाहिए। पहले अरग (अर्घ्य) के करीब दो बजे तक पूजा की पूरी तैयारी हो जाती है । व्रती महिलाएं डाला- सूप सजाती हैं यह डाला और सूप आसपास के शिल्पकार द्वारा बांस का बनाया गया होता है। महिलाएं सूप में पकवान, लड्डू , सेब, संतरा अनानास, ईख, नारियल ,हल्दी और अन्य चीजों से सजाती हैं। छठ में देश के सभी हिस्सों में उगने वाले फलों का प्रयोग किया जाता है। चाहे वह दक्षिण भारत का नारियल हो या उत्तर भारत का सेब।

इस पूरी तैयारी के बाद सभी लोग छठ घाट जाने की तैयारी में लग जाते हैं । छठ घाट का चयन लोग अपनी अपनी सुविधा अनुसार तय करते हैं लेकिन ज्यादातर लोग नदी के घाट या तालाब में जाना पसंद करते हैं , जहां पूरे समाज के लोग एक साथ भगवान सूर्य को अर्घ्य देते हैं। छठ पर्व की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें किसी भी मंत्र या किसी भी पंडित की आवश्यकता नहीं होती है। घाट पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाता है।

डूबते हुए सूरज को अर्घ्य देने के पीछे कई पक्ष रखे जाते हैं जिसमें मुख्य रूप से यह कहा जाता है कि हमें अपने पूर्वजों को कभी भूलना नहीं चाहिए । शाम के अर्घ्य देने के बाद अगली सुबह फिर से लोग घाट पर डाला लेकर जाते हैं और उगते हुए सूरज को अर्घ्य देते हैं। अर्घ्य देने के बाद घाट पर ही प्रसाद दिया जाता है। वर्ती महिलाएं गांव के सभी मंदिरों में पूजा करती है , तत्पश्चात भोजन ग्रहण करती हैं ।

शारदा सिन्हा ने अपने गीत में छठ के महत्व को बताया है -

कांच ही बांस के बहंगिया बहंगी लचकत जाए...

केलवा के पात पर उगेलन सुरुज मल...

शारदा सिन्हा के मैथिली गीत छठ की महिमा को और अत्यधिक आकर्षित बना देते हैं। इस गीत के द्वारा लोग छठ भावनाओं से एकदम जुड़ जाते हैं। बिहार का यह लोकआस्था का महापर्व आज पूरी दुनिया में मनाया जाने लगा है यह महापर्व हमें पवित्रता और भाईचारे की सीख देता है । छठ अपनी विरासत और संस्कृति को अपनाए रखने भी की सीख देती है ।

- आदित्य कुमार

पृष्ठ 1 का शेष

अगले साल फरवरी में बड़े स्तर पर आयोजित होगा डीयू पूर्व छात्र सम्मेलन : प्रो. अनिल कुमार

प्रो. अनिल कुमार: जी बिलकुल, इसके पीछे वज़ह है और वो वजह है कि अभी तक हमारे छात्रों के मन में डीयू ALUMNI का कंसेप्ट नही आया है। अगर कोई विद्यार्थी दिल्ली यूनिवर्सिटी के किसी कॉलेज से पढ़ा हुआ है तो वो बोलता है मैं उस कॉलेज का पूर्व छात्र हूं। डीयू का पूर्व छात्र कंसेप्ट अभी हमारे फाऊंडेशन ने सबसे पहले शुरु किया। धीरे–धीरे लोगों को हमारे पूर्व छात्रों के बारे में पता भी चल रहा है और लोग हमसे जुड़ भी रहे हैं। सबसे पहले जुड़ाव बहुत ज़रूरी है। इसमें समय लगेगा और मैं पूरी तरह आशावान हूं कि हम काफी अच्छा कर पाएंगे ।

Q जब हम डीयू फाउंडेशन के विषय में टटोल रहे थे तो हमने आधिकारिक वेबसाइट पर लिखा देखा कि 2025 तक 10 लाख पूर्व छात्रों को एक मंच पर लाया जाएगा। आप इस लक्ष्य में क्या चुनौतियां देखते हैं?

प्रो. अनिल कुमार: आज हमारा जो सोशल मीडिया पर लिंक्डइन पेज है उसमें 12 लाख से ज्यादा पूर्व छात्र जुड़े हुए हैं। उस दिशा में हमारा प्रयत्न जारी है और धीरे–धीरे हम भारतवर्ष के बाकि शहरों में भी इस काम में जुटे हुए हैं। मेरा विश्वास है कि 2025 तक हम 10 लाख से ज्यादा पूर्व छात्रों को जोड़ लेंगे। जुड़ाव के लिए जरूरी है कि हम बीच–बीच में इस विषय पर छोटे–बड़े कार्यक्रम आयोजित करते रहें, जिससे पूर्व छात्रों को भी एक मंच मिलता रहे। हम फरवरी में एक बड़ा कार्यक्रम कर रहें हैं जोकि दिल्ली यूनिवर्सिटी में ही होगा, जिसमें हम अपने पूर्व छात्रों को जिन्होंने फाऊंडेशन के एंडोनमेंट फंड में योगदान दिया है उन्हें सम्मानित करेंगे।

Q जब भी इस तरह का कार्यक्रम शुरु किया जाता है तो अकेला व्यक्ति इसे संचालित नही कर सकता इसके लिए एक टीम का होना जरूरी है। डीयू फाऊंडेशन की टीम के बारे में बताएं।

प्रो. अनिल कुमार: हमारे इस फाऊंडेशन के चेयरमैन कुलपति जी हैं। कुछ वरिष्ठ प्रोफेसर डॉयरेक्टर हैं। इसके अलावा मैं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में यहां कार्यरत हूं। साथ ही मैनेजर और इंटर्न की हमारी पूरी टीम है। हमारे कुछ साथी जो कॉलेजों में पढ़ा रहे हैं वो भी हमारे साथ काम कर रहे हैं। हमारे कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। हम जो प्रोग्राम करते हैं उसकी रूपरेखा भी बनाते हैं।

Q बीते महीने मुंबई में डीयू फाउंडेशन का एक कार्यक्रम हुआ। उस कार्यक्रम की क्या सफलता रही?

प्रो. अनिल कुमार: 100 साल के इतिहास में पहली बार दिल्ली यूनिवर्सिटी ने दिल्ली के बाहर एक भव्य आयोजन किया। इस आयोजन में 400 से अधिक हमारे पूर्व छात्र शमिल हुए, जिससे यूनिवर्सिटी और पूर्व छात्रों के बीच भावनात्मक जुड़ाव संभव हुआ। उन सभी का अनुभव काफी ज्यादा सकारात्मक था। मुंबई के कार्यक्रम में हमारे कुलपति प्रो. योगेश सिंह जी भी शामिल हुए और उन्होंने यूनिवर्सिटी के 100 सालों की यात्रा के बारे में भी बताया ।

Q डीयू फाउंडेशन के तहत कई प्रकार के प्रोजेक्ट चल रहे हैं, उनमें से स्टार्टअप प्रोजेक्ट है। यह प्रोजेक्ट स्टार्टअप में क्या सहयोग दे रहा है?

प्रो. अनिल कुमार: प्रोजेक्ट स्टार्टअप के तहत हमारा उद्देश्य स्टार्टअप के लिए फंड इकट्ठा करना है। इस प्रोजेक्ट में जो फंड आता है उसे डीयू की उदमोदय टीम को दिया जाता है। उदमोदय टीम उस फंड को नए स्टार्टअप में लगाने के लिए देती है। स्टार्टअप को लगाने का कार्य उदमोदय का है। डीयू फाउंडेशन का काम स्टार्टअप के विचार को आगे बढ़ाने के लिए फंड इकट्ठा करना है ।

-मो. सैफ और सक्षम पांडेय

डॉ. अम्बेडकर कॉलेज का छात्र संघ शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय में छात्र संघ 2023 का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन 3 शुक्रवार नवंबर 2023 को किया गया। समारोह के दौरान सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों- अध्यक्ष पुरु कपासिया, उपाध्यक्ष महेश सिंह, सचिव कनक कसाना, उपसचिव सोहनी राऊत, सांस्कृतिक सचिव आकाश सिंह एवं खेल सचिव लवलिश वत्स ने छात्र एवं महाविद्यालय के हित में कार्य करने की शपथ लेते हुए राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी। इस मौक़े पर मुख्य अतिथि के रूप में जितेन्द्र महाजन, विधायक (रोहतासनगर, दिल्ली) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में दीपक शर्मा, एएसपी(तिहाड़ जेल, नई दिल्ली) को आमंत्रित किया गया। साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) अध्यक्ष तुषार डेढ़ा और सचिव अपराजिता ने नवनिर्वाचित छात्र संघ के पदाधिकारियों सहित महाविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए छात्र हितों की रक्षा हेतु आश्वस्त किया।

शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित अतिथियों, छात्र संघ पदाधिकारियों एवं छात्रों को संबोधित करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. आर. एन. दूबे ने कहा कि छात्र जीवन एक ऐसा पड़ाव हुआ करता है जहां हम तमाम तरह की मुश्किलों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य के प्रति अडिग रहते हैं. हमें पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी से प्रेरणा मिलती है कि किसी भी मोर्चे पर हार नहीं मानना है।

मुख्य अतिथि जितेन्द्र महाजन ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को जीत की बधाई देते हुए कहा कि छात्र संघ का काम महाविद्यालय प्रशासन के सहयोग से निरन्तर छात्र हित में कार्य करते रहने का तो है ही, इसके साथ ही उन पर इस बात का भी दायित्व है कि छात्रों के बीच राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव कैसे पैदा हो, इस संबंध में भी विविध कार्यक्रमों के माध्यम से जागरुकता का प्रसार करते रहें. उनके अनुसार एक क़ामयाब नेता की कहानी छात्र नेता के माध्यम से शुरु होती है इसलिए बतौर छात्र संघ अध्यक्ष कैंपस में बेहतर माहौल बनाए रखने की उनकी पहली जिम्मेदारी है। विशिष्ट अतिथि दीपक शर्मा ने छात्रों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि एक छात्र यदि साहस और निडरता के साथ अपने लक्ष्य के प्रति डटा रहे तो वो एक-एक करके भी चुनौतियों को आसानी से निबटा लेता है, बस आवश्यकता इस बात की है कि वह इस क्रम में अपना हौसला बनाए रखे।

डूसू अध्यक्ष तुषार देढ़ा ने महाविद्यालय के छात्रों को आश्वस्त किया कि छात्र हितों के मसले पर डूसू और उसके पदाधिकारी चौबीस घंटे उनके साथ हैं। वो इस बात की लगातार कोशिश कर रहे हैं कि दिल्ली मेट्रो में रिआयत क़ीमत कार्ड छात्रों के लिए जल्द से जल्द जारी किए जाएं। उन्होंने कहा कि मैं वचन देता हूं आनेवाले समय में डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय डूसू का हिस्सा होगा और यहां के छात्र डूसू के पदाधिकारियों का चयन कर सकेंगे। डूसू सचिव अपराजिता ने बारहवीं के बाद डीयू आने और छात्र संघ का चुनाव लड़के संबंधी प्रसंगों की विस्तृत चर्चा करते हुए छात्रों से अपील की कि जो भी इस विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हों और पढ़ना चाहते हों, उनके सामने यहां का छात्र होने का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए और वो लक्ष्य है- शिक्षा जीवन के लिए और जीवन वतन के लिए। यहां का छात्र भविष्य का नहीं, वर्तमान का युवा होता है और उसके लिए राष्ट्र से उपर कुछ भी नहीं।

कोरोना के बाद यह चार साल बाद पहला शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। इस संबंध में छात्र संघ के समन्वयक प्रोफेसर जितेन्द्र सरोहा ने कहा कि यह समारोह न केवल इस वर्ष के चयनित छात्रों का शपथ समारोह है और न ही नवातुंक छात्र समारोह इस साल आए छात्रों का कार्यक्रम है, यह पिछले चार साल के आए छात्रों का समारोह है, हम शिक्षकों का सामूहिक कार्यक्रम है। प्रोफेसर सरोहा ने छात्र संघ द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहना करते हुए सभी सहयोगियों एवं छात्रों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए एक बेहतर कल के लिए संदेश दिया। इस मौक़े पर मौजूद डूसू के पदाधिकारी के अलावा पिछले चार साल के भूतपूर्व पदाधिकारी और छात्र प्रतिनिदि मौजूद रहे।

छात्र संघ यूनियन 2023-24 के लिए सपथ ग्रहण करते पदाधिकारी

क्रिकेट विश्वकप में भारत का जबरदस्त प्रदर्शन

नई दिल्ली: *एकदिवसीय क्रिकेट विश्वकप 2023 के प्रथम चरण(लीग मैच) के सभी मैच समाप्त हो गए हैं। डेढ़ महीने चलने वाले क्रिकेट के सबसे बड़े महाकुंभ में कुल दस देशों ने भाग लिया।* यह विश्वकप राउंड रॉबिन फॉर्म में खेला गया जिसमें सभी टीमों ने प्रत्येक प्रतिद्वंदी से एक – एक मैच खेला। प्रथम चरण के बाद शीर्ष चार टीमों को सेमीफाइनल खेलने का मौका मिला तथा नीचे की छह टीमें विश्वकप की दौड़ से बाहर हो गई हैं।

सेमीफाइनल मुकाबले 15 एवं 16 नवंबर को खेले जाएंगे। आईसीसी के नियम के अनुसार शीर्ष की टीम चौथे स्थान की टीम के साथ पहला सेमीफाइनल खेलेंगी। वही दूसरा सेमीफाइनल दूसरे एवं तीसरे स्थान की टीमों के बीच खेला जाएगा। विश्वकप का अंतिम तथा फाइनल मैच सेमीफाइनल की विजेता टीमों के मध्य खेला जाएगा।

भारत का सेमीफाइनल मुकाबला वानखेड़े मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध होगा। लीग के मुकाबलों में भारत का प्रदर्शन सराहनीय रहा । विश्वकप में खेले गए अब तक के मुकाबलों में भारत का प्रदर्शन बाकी सभी टीमों से अच्छा रहा । प्रथम चरण में भारत अजेय रहा। भारत के इस विजयरथ में प्रत्येक खिलाड़ी ने अपना सर्वोच्च योगदान दिया है।

लीग स्टेज में भारत,दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड ने टॉप चार में जगह बनाई है, जिसके कारण उन्हें सेमीफाइनल में प्रवेश मिला है।

विराट कोहली पूरे विश्वकप में 594 रनों के साथ सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। रोहित शर्मा (कप्तान) अपने आक्रामक बल्लेबाजी से टीम को हर मैच में अच्छी शुरुआत प्रदान करते हैं, साथ ही साथ वो अपनी कप्तानी से भी प्रभावित कर रहे हैं। नंबर चार पर श्रेयस अय्यर भारत के लिए विश्वकप इतिहास में सर्वाधिक 421 रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। के एल राहुल मुश्किल समय में टीम के लिए आवश्यक रन बनाते हैं। भारत की ओर से बुमराह ने 18 और शमी ने 16 विकेट लिए हैं। वही कुलदीप यादव भारत के लिए लगातार विकेट निकल रहे हैं और जडेजा अपने 3–D गेम से टीम को मजबूत बना रहे हैं। अब तक के सभी मैचों में भारत ने प्रत्येक प्रतिद्वंदी को धूल चटाई है।

भारत की सफलता में कोचिंग स्टाफ का भी बहुत बड़ा हाथ है। टी दिलीप सर ने बेस्ट फील्डिंग मेडल अवार्ड के जरिए ड्रेसिंग रूम का माहौल टीम के अनुकुल रखा है। उम्मीद है कि भारतीय टीम ऐसे ही एकजुट होकर आने वाले मुकाबलों में खेलेगी और देश के लिए तीसरा एकदिवसिय विश्वकप जीतेगी।

- अनुराग द्विवेदी

उद्योगीकरण के युग में बढ़ता प्रदूषण एक बड़ी समस्या।

नई दिल्ली: 19 वीं व 20 वीं शताब्दी को आधुनिकीकरण व उद्योगीकरण का युग कहा जाता है । विभिन्न प्रकार की तकनीक आने के बाद , देश व दुनिया में निर्माण कार्य शुरू हो गए। वृक्षों को काटकर शहर बसाए जाने लगे। अत्यधिक उत्पादन के लिए रसायन व रसायनिक बीजों का उपयोग किया जाने लगा । वर्तमान समय में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या बन गया है । प्रदूषित वातावरण स्वस्थ व्यक्ति को भी अस्वस्थ बना देता है। विश्व में प्रदूषण के मामले में जिन तीन शहरों को शामिल किया गया , उनमें दिल्ली दूसरा सबसे प्रदूषित शहर है। दिल्ली में निरन्तर बढ़ता (ए•क्यू•आई) लेवल लोगों के लिए चिन्ता का कारण बन चुका है । घर से बाहर निकलते ही आँखों में दर्द व साँस लेने में समस्या होने लगती है ।

प्रदूषित वातावरण को ध्यान में रखते हुए, स्कूल, कॉलेज व अन्य शैक्षिक संस्थानों को बन्द कर दिया गया है। प्रदूषण के रोकथाम के लिए , कृत्रिम वर्षा का प्रबन्ध किया जा रहा था परन्तु अकस्मात प्राकृतिक वर्षा हो जाने के कारण आसमान स्वच्छ हो गया ।

पर्यावरण प्रदूषण, सम्पूर्ण विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है । विश्व के सभी देशों को एक साथ एक मंच पर आकर इस समस्या से निदान पाने के लिए विचार-विमर्श करना चाहिए।

- अनुभव सिंह

युवाओं के सपनों की कहानी है 12th फेल

फिल्म - 12वीं फेल
निर्माता/ निर्देशक- विधु विनोद चोपड़ा
कलाकार - विक्रांत मैसी , मेधा शंकर, प्रियांशु चटर्जी, अंशुमान पुष्कर, जोशी अनंतविजय

नई दिल्ली: 12वीं फेल 27 अक्तूबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो गयी है। यह फ़िल्म अनुराग पाठक द्वारा लिखित उपन्यास 12th फेल पर आधारित है। फिल्म की कहानी सच्ची घटना पर आधारित है जिसमें चंबल के एक 12वीं फेल लड़के के आईपीएस बनने तक के सफ़र को फ़िल्माया गया है। विधु विनोद चोपड़ा की ये फ़िल्म वैसे तो आईपीएस मनोज कुमार शर्मा की असल जिंदगी से प्रेरित है लेकिन यों लगता है कि मानो यह देश के हर गाँव या छोटे शहर के युवाओं की कहानी कह रही हो।

मनोज चंबल के एक गाँव में बाहरी दुनिया से बेख़बर सपनों के साथ जी रहा होता है। जिस गाँव में वह रहता है वहाँ परीक्षाओं में नकल करना एक पारंपरिक व्यवस्था है। मनोज का सपना है कि वह किसी तरह नकल करके 12वीं पास कर ले जिससे कि उसको चपरासी की नौकरी मिल जाए। संयोग से एक बार उस गाँव में एक ऐसा अधिकारी पहुँच जाता है जो उस साल पूरी तरह नकल रोक देता है। परिणामस्वरूप, उस साल सारे बच्चों के साथ-साथ मनोज भी फेल हो जाता है लेकिन मनोज उस पुलिस अधिकारी की ईमानदारी से बहुत प्रभावित होता है। इसी क्षण मनोज को यह एहसास होता है कि शक्ति अगर सही व्यक्ति के हाथ में दी जाए तो समाज को आसानी से सुधारा जा सकता है।

मनोज शर्मा के मुख्य किरदार में विक्रांत मैसी पूरी तरह कामयाब रहे हैं। जिस प्रकार वे चंबल के मनोज से आईपीएस मनोज कुमार शर्मा बनने तक के सफ़र में अपने बॉडी लैंग्वेज तथा आचरण में परिवर्तन लाते हैं, वह क़ाबिल-ए-तारीफ है। श्रद्धा जोशी की किरदार में मेधा शंकर, पुलिस ऑफिसर के किरदार में प्रियांशु चटर्जी, अनंत जोशी के किरदार में जोशी अनंतविजय काफ़ी सधे, संतुलित और सक्षम कलाकार के रूप में अपनी अभिनय कुशलता का परिचय देते हैं। ख्यातिलब्ध शिक्षक विकास दिव्यकीर्ति का कैमियो नेचुरल लगता है।

यह फ़िल्म इस मिथक को तोड़ती है कि प्रेम व्यक्ति को पथ से विचलित कर देता है। फिल्म इस तथ्य पर जोड़ देती है कि प्रेम पथ से विचलित व्यक्ति को संतुलित करता है। फ़िल्म के संवाद की तारतम्यता कहीं-कहीं टूटती नज़र आती है। जब मनोज चंबल से दिल्ली आता है तो बुंदेली व हिन्दी के बीच सामंजस्य या संगति नजर नहीं आती है। फ़िल्म में मनोज के संघर्षों में कहीं- कहीं अतिरेक भी नज़र आता है। बहरहाल, यह एक साधारण तरीके से निर्मित बहुत ही ईमानदारी के साथ पर्दे पर उकेरी गई फ़िल्म है। ऐसी जमीनी फ़िल्में बहुत कम ही बनतीं हैं इसलिए अगर यह आपके आस-पास के सिनेमाघरों में लगी हो तो जरूर देखें।

-जयदीप दिनकर

पुस्तक समीक्षा

नाम : ओवर द टॉप
लेखक : अनंत विजय

पत्रकार और लेखक अनंत विजय की पुस्तक ओवर द टॉप का मायाजाल देश में ओटीटी प्लेटफॉर्म कंटेंट विशेष तौर पर वेब सीरीज पर हिंदी में शायद पहली और प्रामाणिक पुस्तक है।

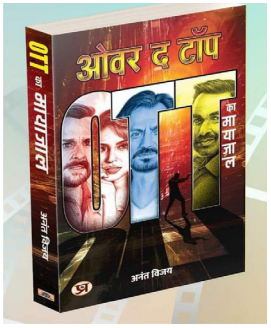

इस पुस्तक में लेखक ने हिंदी वेब सीरीज के राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सरोकारों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। फिल्मों के माध्यम से भी नैरेटिव और एजेंडा सेटिंग होती है, इस पर देश में बहुत अधिक चर्चा कभी नहीं हुई, लेकिन इस पुस्तक में लेखक ने नैरेटिव की उन परतों के भीतर झांकने का प्रयास किया है जिनको जाने अनजाने अनदेखा कर दिया जाता रहा है। पुस्तक फिल्म अध्ययन और उसे देखने का एक नया दृष्टिकोण देती है। एक बेबसीरीज की तरह पुस्तक में रोचकता अंत तक बनी रहती है। प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित यह पुस्तक ऑनलाइन भी उपलब्ध है।

आपदा को अवसर में बदला मारवाड़ियों ने

नई दिल्ली: राजस्थान की अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी भाग को मारवाड़ के नाम से जाना जाता है, जिसमें मुख्यत: जोधपुर, बीकानेर , पाली , नागौर और आसपास के क्षेत्र शामिल है। इन्ही क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को मारवाड़ी कहते हैं।

मारवाड़ क्षेत्र थार मरुस्थल में आता है। इस वजह से यहां की जमीन से अन्न उत्पन्न नहीं होता और इसी आपदा को इन्होंने अवसर में बदला और व्यापार में आ गए और इसी कारण देश–विदेश के विभिन्न भागों में फैल गए। ऐसा नहीं है कि मारवाड़ियों को देश –विदेश में फैल जाने और व्यापार करने से उन्हें किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। कालांतर में उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा । मारवाड़ी व्यापारियों ने अंग्रेज व्यापारियों के एकाधिकार को हर जगह चुनौती देनी शुरू कर दी। तब मारवाड़ी व्यापारियों को समझ में आया कि केंद्रीय सत्ता से जुड़े अंग्रेज व्यापारियों से व्यावसायिक टक्कर लेना मुश्किल है अंतः 1898 में बंगाल के मारवाड़ी व्यापारियों ने 'मारवाड़ी एसोसियेशन' नाम की संस्था बनायी। इस संस्था की स्थापना के साथ उनकी घोषणा की -' राजनीति का सम्बन्ध व्यापार से रहता है और यह प्रत्यक्ष रूप से व्यापार को प्रभावित करती है, इसलिए 'मारवाड़ी एसोसियेशन' भारत की राजनीति से परहेज़ नहीं रखेगी' । मारवाड़ियों से सम्बंधित पत्र-पत्रिकाओं में मारवाड़ी व्यापारियों से राजनीति में सक्रिय योगदान का आह्वान किया गया तथा वर्तमान समय में भी मारवाड़ी किसी न किसी रूप में राजनीति से जुड़े है।

आखिर अतिपिछड़े क्षेत्र के लोगों ने कैसे पाई सफलता

मारवाड़ियो की सफलता के बारे में कहा जा सकता है कि मारवाड़ी उस माटी का वृक्ष नही जिसको नदियों ने सींचा है। बंजर माटी में पल कर मारवाडियों ने मृत्यु से जीवन को खींचा है। मारवाड़ी समुदाय मरुस्थल से आता है जहां कुछ अन्न नही होता है। इसलिए उन्होंने व्यापार शुरू किया और आज देश के 42% विलियनर्स मारवाड़ी है।

मारवाड़ी लोगों में व्यापार के लिए एक शब्द हमेशा प्रचलित रहता है - वो शब्द है पड़ता । यदि मारवाड़ी समुदाय के किसी व्यक्ति को व्यापार में नुकसान होता है तो वो बोलते है पड़ता, नही पड़ता । जिसका मतलब है कि मैने ये जो वस्तु खरीदी है ये तो इतने में भी नही बिक रही जितने में मैने खरीदा है। इसलिए मारवाड़ी सामान को जितने में पड़ता है उस से ज्यादा रुपए में बेचता है और लाभ कमाता है। दूसरा मारवाड़ी कभी रिस्क से नही डरता और वो उस समान को बेचते है जिसमें लाभ कम हो परन्तु लोग उस समान को बार - बार खरीदें।

राजस्थान में अक्सर एक कहावत प्रचलित है कि हर मारवाड़ी गणित में होशियार होता है, इसका कारण ये है कि मारवाड़ी अपने हिसाब को हमेशा अपडेट रखते है । मारवाड़ी बचत को ही अपनी कमाई मानते हैं, इसलिए मारवाड़ी इतने सफल हैं ।

वर्तमान समय में मारवाड़ियो की संख्या 8 मिलियन से ज्यादा है। देश की कई प्रमुख कंपनिया मारवाड़ी उद्योगपति चला रहे हैं।

- सूरज यादव

शिक्षक सहयोगी: *प्रो. बिजेंद्र कुमार, प्रो. शशि रानी, डॉ. रंजीत कुमार*
डिज़ाइन परिकल्पना: *नीरज कुमार, योगेश*
छात्र सहयोगी: *मो.सैफ, विनय, सक्षम पांडेय, सत्यम वर्मा, करुणा नयन चतुर्वेदी, राहुल, नरसिंह, विवेक लोधी, वीरेंद्र नोगिया*
डिस्क्लेमर: ब्राक मीडिया के इस प्रायोगिक समाचार में छपी सामग्री लेखक के अपने विचार है, इस सामग्री का संपादकीय टीम से कोई संबध नही है।